अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

वर्धमान के प्रतिनिधि की सन्निधि में वर्धमान महोत्सव का मंगल शुभारम्भ

-महातपस्वी आचार्यश्री ने ज्ञान और अध्यात्म के क्षेत्र में प्रवर्धमान बनने की दी पावन प्रेरणा

-साध्वियों और समणियों ने गीत के माध्यम से भावनाओं को किया अभिव्यक्त

-साध्वीवर्याजी ने भी लोगों को किया उत्प्रेरित

-आचार्यश्री ने अनेकों साधु, साध्वी व समण श्रेणी को यावज्जीवन के लिए चाय का कराया त्याग

01.02.2019 तिरुपुर (तमिलनाडु): तिरुपुर की धरती पर प्रथम बार तेरापंथ के ग्यारहवें आचार्य के रूप में महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का मंगल पदार्पण और उसके साथ ही तेरापंथ धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण आयोजन वर्धमान महोत्सव को प्राप्त कर मानों पूरा तिरुपुर नगर खुशियों में झूम उठा है। चारों ओर उत्सव जैसा माहौल बना हुआ है। तिरुपुरवासियों के लिए मानों होली, दीपावली और दशहरे ने एक साथ दस्तक दी हो। ऐसे उत्साह, उमंग और उल्लास भरे माहौल में शुक्रवार को परम पावन महातपस्वी भगवान वर्धमान के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में वर्धमान महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का मंगल शुभारम्भ हुआ।

कार्यक्रम में आचार्यश्री के पदार्पण से पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की उपस्थिति में साध्वी वैभवयशाजी, समणी पुण्यप्रज्ञाजी, साध्वी मैत्रीयशाजी, समणी प्रणवप्रज्ञाजी द्वारा पृथक-पृथक गीतों का संगान किया गया। इसके उपरान्त वर्धमान समवसरण में आचार्यश्री का मंगल पदार्पण हुआ तो पूरा वातावरण जयनादों से गूंज उठा। आचार्यश्री के दोनों ओर साधु-साध्वियों की उपस्थिति तथा सामने की ओर समणश्रेणी तथा सैंकड़ों-सैंकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति ऐसे महसूस हो रही थी मानों महासूर्य की समस्त रश्मियां अपने प्रणेता से प्रस्फुटित हो रही हों। आचार्यश्री के पदार्पण के पश्चात् समणीवृंद ने समूह रूप में गीत का संगान किया। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने लोगों को संबोध प्रदान किया।

इसके उपरान्त परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने वर्धमान महोत्सव के प्रथम दिवस के अवसर पर अपना प्रथम मंगल संदेश प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को जीवन में वर्धमान रहना चाहिए, निरंतर विकास करते रहना चाहिए। विकास भौतिकता की दिशा में होता है तो आध्यात्मिकता के दिशा में भी विकास होता है। दुनिया के लिए दोनों क्षेत्रों में विकास अपेक्षित होता है। गृहस्थों के भौतिकता के दिशा में भी वर्धमान हो सकते हैं तो आध्यात्मिकता के दिशा में भी वर्धमान हो सकता है। आज वर्धमान महोत्सव का शुभारम्भ हो रहा है। इसके अनेक मायने हैं। इस महोत्सव का नाम भगवान महावीर के नाम से जुड़ा हुआ है। मानों वह जिह्वा धन्य होती है, जिससे परम पवित्र आत्मा का नाम लिया जाता है। मर्यादा महोत्सव से पहले गुरुकुलवास में साधु, साध्वियों, समण श्रेणी की संख्या वृद्धि भी होती है, इसलिए वर्धमान महोत्सव का आयोजन किया जाता है। संख्या वृद्धि होना अच्छी बात है, किन्तु इसके साथ-साथ आदमी के भीतर गुणवत्ता की भी वृद्धि हो, वर्धमानता हो, साधु-साध्वियों की गुणवत्ता में वर्धमानता हो, ऐसा प्रयास होना चाहिए। जीवन में गुणवत्ता न हो तो जीवन निष्प्राण सा हो जाता है। जीवन में गुणवत्ता हो तो प्राणवत्ता बनी रहती है। जीवन में वर्धमान बने रहने के लिए ज्ञान का निरंतर विकास करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों को दसवेआलियं आदि ग्रंथों को कंठस्थ करने और उन्हें निरंतर चितारने की पावन प्रेरणा प्रदान की। साधु का संबंध आगम के साथ बना रहे। निरंतर ज्ञान की वृद्धि करते रहने का प्रयास करना चाहिए। चारित्रात्माएं और आदमी ज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में निरंतर वर्धमान बनने का प्रयास करे।

मंगल प्रवचन के पश्चात आचार्यश्री ने समुपस्थित साधु, साध्वियों व समणश्रेणी से चाय पीने के संदर्भ में पूछा तो अनेकों साधु, साध्वी और समणीवृंद द्वारा यावज्जीवन के लिए चाय-कॉफी का त्याग किया गया। इसके उपरान्त तेरापंथ कन्या मण्डल ने स्वागत गीत का संगान किया। तिरुपुर तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अनीता बरड़िया, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री जयसिंह कोठारी, श्री जीतमल जैन व उपासिका श्रीमती संजू दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी तो वहीं श्रीमती पुष्पादेवी ने गीत का संगान किया। मुनि कुमुदकुमारजी ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।